(1) भारतीय राष्ट्रधारा का पुनः प्रवाह (2) भगवान कृष्ण (3) राष्ट्रीय जीवन की समस्याएं (4) भारतीय राजनीति की मौलिक भूल (5) लोकमान्य तिलक की राजनीति (6) भारतीय संविधान पर दृष्टि (7) जीवन का ध्येय तथा राष्ट्रीय आत्मानुभूति आदि। राजनीति में प्रवेश अप्रैल, 1951 में उत्तर प्रदेश में परमपूज्य श्री गुरूजी की अनुमति से संघ के स्वयंसेवकों द्वारा उत्तर प्रदेश जनसंघ नाम से एक नये राजनैतिक दल की स्थापना हुई। लखनऊ के अधिवक्ता श्री राजकुमार जी उसके अध्यक्ष चुने गये तथा पण्डित दीनदयाल उसके महामंत्री बने। इसी योजना के अन्तर्गत 5 मई को डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कलकत्ता में पीपुल्स पार्टी की स्थापना की तथा 27 मई को पंजाब में जनसंघ बना।

20 से 22 अक्टूबर तक दिल्ली के राघोमल हायर सेकेन्डरी स्कूल में एक अखिल भारतीय दल की स्थापना के लिए त्रिदिवसीय सम्मेलन हुआ जिसमें 21 अक्टूबर को भारतीय जनसंघ की स्थापना की घोषणा की गई। दिसम्बर, 1952 में कानपुर में भारतीय जनसंघ का प्रथम अधिवेशन हुआ और डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी उसके अखिल भारतीय अध्यक्ष तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय महामंत्री सर्वानुमति से बनाये गये। इस संगठन के उद्भव के मूल में वे अत्याचार और अन्याय थे जो 1948 में पं. नेहरू के द्वारा संघ पर लगाये गये प्रतिबन्ध के समय संघ और उसके कार्यकर्ताओं ने झेले थे। उस समय भी विचार स्वयमेव प्रस्फुटित हुआ कि ऐसे अन्यायों के निराकरण के लिए अपना समर्थक एक राजनैतिक पक्ष होना आवश्यक है।

जनसंघ की प्रगति

भारतवर्ष के कोने-कोने में भारतीय जनसंघ की भूमिका, आवश्यकता तथा रीति-नीति को पहुंचाने के लिए डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी और पं. दीनदयाल उपाध्याय अनथक प्रयास में जुट गये। चारों ओर नए दल का महान स्वागत हुआ। और आयोजित स्वागत समारोहों और सार्वजनिक सभाओं में लाखों लोग उपस्थित रहते थे।

जनसंघ बड़ी तेजी से बढ़ने लगा और इसी बीच जनसंघ की रीति-नीति और कार्यकर्ताओं का व्यवहार सम्बन्धी मार्गदर्शन करने के लिए पं. दीनदयाल जी ने 'सिद्धान्त और नीति' नामक पुस्तक की रचना की। पं. दीनदयाल जी भारतीय जनसंघ के मार्गदर्शक और सूत्रधार थे।

सन् 1953 से 1967 तक पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय पार्टी के महामंत्री के नाते पार्टी का संचालन करते रहे। जम्मू आन्दोलन की समाप्ति के बाद जम्मू-कश्मीर प्रजा परिषद् का विलय जनसंघ में हो गया। 14 वर्ष के महामन्त्रित्व काल